काल भैरव अष्टकम् अर्थ सहित: पूरा पाठ, हिंदी अर्थ | काल भैरव अष्टमी 2026

26 नवंबर 2026 • पढ़ने में 9 मिनट स्तोत्र काल भैरव काल भैरव अष्टमी

काल भैरव अष्टकम् आदि शंकराचार्य द्वारा रचित आठ श्लोकों की स्तुति है, जिसकी हर पंक्ति का अंत है: "काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे", काशी नगरी के स्वामी काल भैरव को मैं भजता हूँ। काल भैरव अष्टमी (मंगलवार, 1 दिसंबर 2026) पर इसका पाठ विशेष माना जाता है। नीचे **काल भैरव अष्टकम् अर्थ सहित** है; पाठ हमने 1953 और 1910 के छपे संस्करणों से मिलाकर दिया है।

🙏 पूरी कथा YouTube पर देखिए: अंत तक देखें, 👍 लाइक करें और 💬 कमेंट में 'ॐ नमः शिवाय' लिखें। इससे यह कथा और भक्तों तक पहुँचती है।

YouTube पर पूरा वीडियो

सब्सक्राइब करें

▶️ काल भैरव की उत्पत्ति की कथा, शिव महापुराण (12 मिनट): YouTube पर देखें

काल भैरव अष्टकम्: पूरा पाठ (8 लिपियों में)

देवनागरी | English | বাংলা | ଓଡ଼ିଆ | తెలుగు | ಕನ್ನಡ | മലയാളം | தமிழ்

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ १ ॥

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ २ ॥

शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ३ ॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं

भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ४ ॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ५ ॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ६ ॥

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ७ ॥

भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ८ ॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं

ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।

शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं

ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसन्निधिं ध्रुवम् ॥ ९ ॥

लिपि बदलने से शब्द नहीं बदलते: वही संस्कृत पाठ, आपकी लिपि में (अक्षर-से-अक्षर रूपांतरण)। तमिल में छोटे अंक संस्कृत ध्वनियाँ दिखाते हैं। 🔊 आवाज़ आपके फ़ोन/कंप्यूटर की अपनी मशीन-आवाज़ है; सही उच्चारण के लिए हमारे वीडियो सुनें।

🔊 सुनें (पंक्ति-दर-पंक्ति) ■ रोकें गति सामान्य

📿 डिजिटल माला: ॐ काल भैरवाय नमः

0

माला पूरी: 0 • कुल जप: 0

जप 🙏

फिर से शुरू



काल भैरव, लगभग 1820 की चित्रकला (public domain, Wikimedia Commons)

श्लोक और हिंदी अर्थ

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ १ ॥

अर्थ (1): जिनके पवित्र चरण-कमलों की सेवा देवराज इंद्र करते हैं, जिन्होंने सर्प का यज्ञोपवीत पहना है, जिनके सिर पर चंद्रमा है, जो कृपा करने वाले हैं, नारद आदि योगी जिनकी वंदना करते हैं, उन दिगंबर, काशी नगरी के स्वामी काल भैरव

को मैं भजता हूँ।

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ २ ॥

अर्थ (2): जो करोड़ों सूर्यों जैसे प्रकाशमान हैं, भवसागर से पार कराने वाले परम हैं, नीलकंठ हैं, मनचाहा फल देने वाले और तीन नेत्रों वाले हैं, काल के भी काल, कमल जैसे नेत्रों वाले, अक्षमाला और शूल धारण करने वाले, अविनाशी: उन काशीपति काल भैरव को भजता हूँ।

शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ३ ॥

अर्थ (3): जिनके हाथों में शूल, टंक (कुल्हाड़ी), पाश और दंड हैं, जो सबके आदि कारण हैं, श्याम शरीर वाले आदिदेव, अविनाशी और रोग-रहित हैं, भयंकर पराक्रम वाले प्रभु, अद्भुत तांडव के प्रेमी: उन काल भैरव को भजता हूँ।

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ४ ॥

अर्थ (4): जो भोग और मोक्ष दोनों देने वाले हैं, जिनका रूप सुंदर और प्रशंसनीय है, जो भक्तों पर स्नेह करने वाले हैं, समस्त लोक जिनका शरीर है, जिनकी कमर पर सोने की करधनी मधुर झनकार करती है: उन काल भैरव को भजता हूँ।

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ५ ॥

अर्थ (5): जो धर्म के सेतु की रक्षा करते हैं और अधर्म के मार्ग का नाश करते हैं, कर्म के बंधन से छुड़ाते हैं, कल्याण देते हैं, सर्वव्यापक हैं, जिनका शरीर सुनहरे शेषनाग के पाश से शोभित है: उन काल भैरव को भजता हूँ।

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ६ ॥

अर्थ (6): रत्नों की पादुकाओं की चमक से जिनके दोनों चरण सुंदर हैं, जो नित्य, अद्वितीय, इष्ट देव और निर्मल हैं, जो मृत्यु के अहंकार का नाश करते हैं, विकराल दाँतों वाले हैं और मोक्ष देते हैं: उन काल भैरव को भजता हूँ।

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ७ ॥

अर्थ (7): जिनके अट्टहास से ब्रह्मा के रचे ब्रह्मांडों के कोश फट जाते हैं, जिनकी दृष्टि पड़ते ही पापों का जाल नष्ट हो जाता है, जो कठोर शासक हैं, आठ सिद्धियाँ देने वाले हैं और कपालों की माला धारण करते हैं: उन काल भैरव को भजता हूँ।

> भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं
>
> काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।
>
> नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
>
> काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ८ ॥

अर्थ (8): जो भूतगणों के नायक हैं, विशाल कीर्ति देने वाले हैं, काशी में बसने वाले लोगों के पुण्य और पाप का शोधन करने वाले विभु हैं, नीति के मार्ग के ज्ञाता, पुरातन और जगत के स्वामी हैं: उन काल भैरव को भजता हूँ।

> कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
>
> ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
>
> शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं
>
> ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसन्निधिं ध्रुवम् ॥ ९ ॥

अर्थ (9): (फलश्रुति) जो इस मनोहर कालभैरवाष्टक का पाठ करते हैं, जो ज्ञान और मुक्ति का साधन है, अद्भुत पुण्य बढ़ाता है, और शोक, मोह, दीनता, लोभ, क्रोध और ताप का नाश करता है, वे निश्चित ही काल भैरव के चरणों का सान्निध्य पाते हैं।

काल भैरव अष्टमी पर पाठ

- संध्या के समय दीया जलाकर, "ॐ काल भैरवाय नमः" 11 बार बोलें, फिर अष्टकम् का पाठ करें।
- शिव महापुराण के अनुसार इस दिन व्रत और रात्रि जागरण के साथ काल भैरव का स्मरण बड़े पापों से मुक्ति दिलाता है।
- पूरी विधि: काल भैरव अष्टमी 2026: तिथि, विधि और मंत्र

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

काल भैरव अष्टकम् किसने लिखा?

आदि शंकराचार्य ने; छपे संस्करण की अंतिम पंक्ति में यही लिखा है।

काल भैरव को "काशिकापुराधिनाथ" क्यों कहते हैं?

शिव महापुराण के अनुसार शिव ने काल भैरव को काशी का अधिकार दिया; लोग उन्हें काशी का कोतवाल कहते हैं।

काल भैरव अष्टमी 2026 कब है?

मंगलवार, 1 दिसंबर 2026 (मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी)।

🔱 कथा, जाप और स्तोत्र अपनी आवाज़ में: शिव कैलाशा YouTube चैनल

रोज़ एक कथा या जाप WhatsApp पर: शिव कैलाशा WhatsApp चैनल से जुड़ें